C—10

APPOINTMENTS NOTES

# न्यूनतम बाधित वातावरण समाकलन (Least Restricted Environment Integration)

26

भूमिका :— न्यूनतम बाधक वातावरण का आशय इसके नाम से ही स्पष्ट होता है, अर्थात समावेशी अक्षम एवं विकलांग बालकों के लिये बाधाओं को न्यूनतम कर शैक्षिक वातावरण का निर्माण न्यूनतम बाधक वातावरण निर्माण कहलाता है। इस प्रकार की व्यवस्था में अक्षम बालकों को सामान्य बालकों के समान ही सभी शैक्षिक साधन उपलब्ध कराये जाते हैं। साथ ही विद्यालय एवं कक्षा-कक्ष की व्यवस्था को उनके लिये बाधा रहित बनाया जाता है।

आधारभूत संरचना के लिये बाधारहित वातावरण की सुगम पहुँच :— विद्यालय का बाधारहित वातावरण समावेशी विद्यालय के सृजन के लिये आवश्यक है। बाधारहित वातावरण से ही विद्यालय की आधारभूत संरचना का निर्माण समावेशी शिक्षा के रूप में होता है। इसलिए समावेशी विद्यालयों के सृजन के लिये बाधा रहित वातावरण का निर्माण किया जाए तथा उसके अनुरूप आधारभूत संरचना की जाय। वर्तमान समय में बाधारहित वातावरण के निर्माण में अनेक प्रकार की चुनौतियाँ हैं जिससे विद्यालय का वातावरण एवं आधारभूत संरचना समावेशी विद्यालयों के अनुरूप नहीं बन पाती। बाधा रहित वातावरण, सुगमता की आधारभूत संरचना की प्रमुख चुनौतियों को निम्नलिखित रूप में प्रकट किया जा सकता है :—



Scanned with CamScanner

(1) विद्यालय में भौतिक संसाधन संबंधी बाधाएँ :- बाधा रहित वातावरण के निर्माण में प्रमुख बाधा भौतिक संसाधनों से संबंधित होती है। इन बाधाओं के आधार पर ही समावेशी विद्यालय का सृजन तथा बाधा रहित वातावरण का निर्माण नहीं हो पाता। प्रायः सरकारी विद्यालयों में उचित विद्यालय भवन, कक्षा-कक्ष, खेल का मैदान एवं खेल के उपकरण आदि का व्यापक अभाव देखा जाता है। इससे विद्यालयी व्यवस्था में अनेक प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न होती हैं जिससे समावेशी शिक्षा व्यवस्था सम्भव नहीं हो पाती।

(2) सामुदायिक सहयोग सम्बन्धी बाधाएँ :- समुदाय के सभी व्यक्तियों का यह मानना है कि सरकारी विद्यालयों की व्यवस्था का दायित्व सरकार का होता है जबकी वे यह भूल जाते हैं कि उनके बालक-बालिका जब विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तो उनको अपेक्षित सहयोग करके विद्यालय के वातावरण को श्रेष्ठ बनाना चाहिये परन्तु वे इस प्रकार का सहयोग नहीं करते वरन् स्कुल से सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

(3) अभिभावक सहयोग सम्बन्धी बाधाएँ :- प्रायः यह देखा जाता है कि अभिभावक बिकलांग एवं अपवंचित बालकों को विद्यालय तक नामांकन के लिये नहीं लाते। यदि किसी प्रकार उनका नामांकन हो भी जाता है तो अपने बालक-बालिकाओं की



Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS NOTES

28

शिक्षण प्रक्रिया में सहयोग नहीं करते। (समय से विद्यालय न भेजना, उनको गृहकार्य में लगाना तथा विद्यालयी गतिविधियों में उनको भाग लेने के लिए प्रोत्साहित न करना आदि। इसका प्रभाव विद्यालय के वातावरण पर भी पड़ता है तथा शिक्षकों का इन बालकों एवं अभिभावकों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

(4) दार्शनिक विचारों सम्बन्धी बाधाएँ :— दार्शनिक विचारों सम्बन्धी बाधाओं के रूप में शिक्षकों को समावेशी दर्शन सम्बन्धी विचारों का ज्ञान नहीं होता। इससे शिक्षक प्रधानाध्यापक एवं अन्य कर्मचारी विकलांग छात्रों के लिये सकारात्मक भाव नहीं रखते। इस प्रकार न तो विद्यालय का वातावरण बाधारहित रूप में विकसित होता है और न ही विद्यालय का स्वरूप समावेशी विद्यालय के रूप में विकसित होता है।

(5) दृष्टिकोण सम्बन्धी बाधाएँ :— शिक्षक, अभिभावक एवं समुदाय में विकलांग, अपवंचित एवं पिछड़े बालक - बालिकाओं के प्रति नकारात्मक भाव रखा जाता है उनके बारे में अनेक प्रकार के पूर्वाग्रह समाज में प्रचलित होते हैं जिसके परिणाम स्वरूप उनके अनुरूप वातावरण विद्यालय में विकसित नहीं हो पाता। इससे समावेशी विद्यालयों के अनुरूप विद्यालय संस्कृति भी विकसित नहीं होती। संकीर्ण दृष्टिकोण वातावरण को बाधा रहित बनाने के मार्ग की प्रमुख चुनौती है।

❖ Lawless are they who make their will their law.



Scanned with CamScanner

(6) शिक्षक प्रशिक्षण का अभाव :— शिक्षकों को विद्यालय में शिक्षण करने से पूर्व सामान्य बालकों वाली कक्षा में शिक्षण अभ्यास कराया जाता है। दूसरे शब्दों में छात्राध्यापक भी सामान्य बालकों की कक्षा में शिक्षण अभ्यास करना चाहते हैं। जब उनको समावेशी छात्र-छात्राओं के लिये विद्यालय वातावरण निर्माण करने की योग्यता प्राप्त नहीं हो पाती तो उन बाधाओं को दूर नहीं कर पाते जो कि समावेशी शिक्षा में उत्पन्न होती है।

(7) शिक्षण अधिगम सामग्री का अभाव :— विद्यालयी व्यवस्था में शिक्षण अधिगम सामग्री का अभाव पाया जाता है। इस कारण शिक्षक छात्रों के अधिगम स्तर को उच्च नहीं बना पाते और न ही वे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में छात्रों की रुचि विकसित कर पाते हैं। इससे विद्यालयी वातावरण में छात्र-छात्राओं को अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है तथा विद्यालय का वातावरण भी अनेक बाधाओं से युक्त हो जाता है।

(8) नवाचारों के ज्ञान का अभाव :— शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक को शैक्षिक नवाचारों का ज्ञान न होने पर शिक्षक छात्रों की समस्याओं को न तो समझ पायेगा और न ही उनका समाधान खोजा जायेगा। इस स्थिति में विद्यालय का वातावरण बाधाओं से मुक्त नहीं होगा तथा छात्रों का शैक्षिक विकास भी होगा।

Man proposes, but God disposes. ❖



Scanned with CamScanner

(9) वित्तीय बाधाएँ !— वर्तमान समय में विद्यालयों को साधन सम्पन्न एवं बाधा-रहित बनाने के लिये धन की आवश्यकता होती है। प्राय: यह देखा जाता है कि सरकारी विद्यालयों में धन का अभाव होता है। इससे विद्यालय में विविध प्रकार के संसाधनों का अभाव पाया जाता है। जैसे — खेल के मैदान एवं उपकरणों का अभाव, ओवरहैड प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर एवं अन्य शिक्षक सहायक यन्त्रों का अभाव आदि। इससे विद्यालय का वातावरण बाधाओं से ग्रसित हो जाता है तथा उचित शैक्षिक वातावरण का निर्माण नहीं हो पाता।

(10) पूर्वाग्रहों का प्रभाव — विद्यालय में अनेक शिक्षक पूर्वाग्रहों से ग्रसित होते हैं। वे अक्षम, अपवंचित एवं पिछड़े छात्रों के प्रति अनेक प्रकार की नकारात्मक अवधारणाएँ रखते हैं जिससे वे उनके अनुरूप विद्यालय का वातावरण निर्माण करने में किसी भी प्रकार की रुचि का प्रदर्शन नहीं करते जिसके परिणामस्वरूप बाधारहित वातावरण निर्मित नहीं हो पाता।

(11) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया संबंधी बाधाएँ !— विद्यालयों में जब छात्रों की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में रुचि नहीं होती या शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की प्रभावहीनता छात्रों के अधिगम



Scanned with CamScanner

इतर को निम्न ही नहीं करती, वरन् वातावरण को विविध प्रकार की बाधाओं से ग्रसित बनाती है जिससे कि शैक्षिक विकास अवरुद्ध होता है।

(12) शैक्षिक तकनीकी सम्बन्धी बाधाएँ :— बाधारहित वातावरण की उपलब्धता की प्रमुख चुनौती शैक्षिक तकनीकी का विद्यालयों में अभाव माना जाता है। प्रायः विद्यालय के शिक्षकों को शैक्षिक तकनीकी के बारे में ज्ञान नहीं होता जिसके परिणामस्वरूप वे उसका उपयोग अक्षम एवं अपवंचित छात्रों के लिये नहीं कर पाते जिससे विद्यालय के वातावरण में अनेक प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न होती हैं तथा शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ही विद्यालयी व्यवस्था के प्रति अपना विश्वास प्रकट नहीं कर पाते। इस प्रकार की स्थिति में विद्यालय का वातावरण बाधा-रहित नहीं बन पाता।

(13) बाधारहित वातावरण की अन्य चुनौतियाँ :— वातावरण को बाधारहित बनाने संबंधी अन्य चुनौतियाँ भी विद्यालय में एवं विद्यालय से बाहर देखी जाती हैं।

(i) विद्यालय भवन तक आने-जाने की सुविधा न होने के कारण विकलांग छात्र विद्यालय तक आने में असमर्थ होते हैं तथा शिक्षा से वंचित हो जाते हैं।

(ii) विद्यालय में प्रवेश करते समय विकलांग छात्रों को परेशानी का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनका व्हील चेयर



Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS NOTES

02 विद्यालय में प्रवेश आसानी से नहीं कर पाते।

(iii) विद्यालय में विकलांग छात्रों को ऊपर चढ़ने के लिये किसी प्रकार की रेलिंग नहीं होती जिसका सहारा लेकर वे चढ़ सकें।

(iv) विद्यालय में उचित प्रकार की व्यवस्था नहीं होती जिससे दृष्टिबाधित छात्र विद्यालय में उचित प्रकार से अध्ययन नहीं कर पाते।

(v) विद्यालय में उनके बैठने के लिए उचित फर्नीचर की व्यवस्था नहीं होती जिससे वे सरलता से बैठ सकें तथा अपना कार्य सम्पन्न कर सकें।

(vi) विद्यालयी व्यवस्था में उनको उचित क्षेत्रफल मिल सके इस आधार पर कक्षा-कक्षों का निर्माण नहीं किया जाता जिससे उनको कम जगह मिलती है।

(vii) विद्यालय भवन के दरवाजे इस प्रकार के होते हैं कि उनमें व्हील चेयर सहित विद्यार्थी प्रवेश नहीं कर पाते हैं। दरवाजे सामान्य आकार के होते हैं।

(viii) विद्यालय में छात्रों को अपनी भाषा में बात करने की छूट नहीं होती जो कि उनके कोमल मन पर विपरीत प्रभाव डालती है।

(ix) विद्यालय में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का स्वरूप एवं संचालन विकलांग बालकों को ध्यान में रखकर नहीं किया जाता जिससे उनको असुविधा होती है।

(x) विद्यालय के शौचालयों का स्वरूप इस प्रकार का नहीं होता जिससे कि विकलांग छात्र उनका उपयोग

❖ No greater shame to man than inhumanity.

May Sa 1 Su 2 Mo 3 Tu 4 We 5 Th 6 Fr 7 Sa 8 Su 9 Mo 10 Tu 11 We 12 Th 13 Fr 14 Sa 15 Su 16 Mo 17 Tu 18 We 19 Th 20 Fr 21 Sa 22 Su 23 Mo 24 Tu 25 We 26 Th 27 Fr 28 Sa 29 Su 30 Mo 31

Scanned with CamScanner

सरल से कर सकें

(XI) विद्यालय में खेल सम्बन्धी उपकरणों एवं खेल व्यवस्था का निर्धारण भी विकलांग छात्रों को ध्यान में रखकर नहीं किया जाता।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि विकलांग व्यक्तियों के लिये विद्यालयी व्यवस्था में ही नहीं वरन् विद्यालय से घर तक की दूरी में भी अनेक बाधायें होती हैं। विद्यालय भवन का स्वरूप शिक्षकों की सोच तथा विद्यालय स्वरूप आदि बाधारित वातावरण की प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इनको दूर किये बिना बाधारहित वातावरण तैयार नहीं हो सकता।

Scanned with CamScanner